2-7-2002

एकमत संगठन की शक्ति से बाप की प्रत्यक्षता

आज आप सबकी याद प्यार लेते हुए बापदादा के पास पहुँची। बापदादा ने दूर से ही आओ बच्चे, मीठे बच्चे कह मधुर मिलन मनाया और अपने बाहों की माला हमारे गले में डाल लवलीन कर दिया। कुछ समय बाद बाबा

बोले, बच्ची आज क्या समाचार लाई हो? मैं बोली, बाबा आजकल तो चारों ओर याद की भट्ठियां चल रही हैं और चारों ओर आपकी श्रीमत प्रमाण सब अपने क्लास में आने वाले नये ब्राह्मणों की संख्या बढ़ा रहे हैं। सीजन में हरेक आपको रिजल्ट देंगे इसलिए याद और सेवा दोनों अच्छे उमंग-उत्साह से चल रही हैं। बापदादा मुस्कराते बोले, बापदादा बच्चों का उमंग-उत्साह देख खुश होते हैं 'वाह मेरे लाडले नूरे जहान बच्चे वाह'! सदा उमंग-उत्साह से फ़रिश्ता बन उड़ते रहो। साथ-साथ बापदादा बच्चों को और भी तीव्र गति के पुरुषार्थ में तीव्र गति से उड़ाना चाहते हैं। अब बापदादा के दिल की यही आश है कि मेरा हर बच्चा फरिश्ते रूप में विश्व के आगे प्रत्यक्ष हो, ऐसा सम्पन्न फ़रिश्ता जिसका पुरानी दुनिया के किसी भी आकर्षण (लगाव), पुराने संस्कारों की आकर्षण से मन्सा तक भी कोई रिश्ता नहीं हो। वह तब होगा जब ज्वाला रूप बने। अभी भी तपस्या है, सेवा है लेकिन एंजिल अर्थात् अपने को और दूसरों को अपने द्वारा एडजेस्ट करने की शक्ति हो, वो अब ज्यादा चाहिए क्योंकि ये संगठन में सबके संगठन की ज्वाला रूप का प्रभाव ही बाप के प्रत्यक्षता का पर्दा खोल सकेगा। लेकिन पर्दा खुलने के पहले संगठन एवररेडी चाहिए। अब इन्डीविज्युवल अपने पुरुषार्थ में हरेक यथा शक्ति लगा हुआ है लेकिन संगठन की शक्ति बिना प्रत्यक्षता हो नहीं सकती। यह लक्ष्य कम है। इसीलिए बापदादा की यही आश है कि हरेक अपने को और संगठन को शक्तिशाली बनाने का जिम्मेवार समझ इसमें उमंग-उत्साह का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाये। इस समय हर बच्चे को इस दृढ़ संकल्प द्वारा प्रैक्टिकल में बापदादा को स्नेह का रिटर्न दिखाना है। ऐसे बोल बोलते ऐसे लगा कि बापदादा कुछ समय के लिए जैसे यहाँ है ही नहीं। बाद में बाबा बोले, बापदादा देखेंगे इन भट्ठियों में कौन-सा बच्चा इस विशेष संकल्प का बीड़ा उठाते हैं तो ड्रामा विजय का नगाड़ा स्वत: ही बजायेगा।

ऐसे कहते बापदादा ने विशेष दादियों को और साथ-साथ कुछ मुख्य निमित्त भाई बहनों के संगठन को इमर्ज किया और बहुत शक्तिशाली दृष्टि

देते बोले, सबको अब दिल से दिखावे से नहीं, ये प्रैक्टिकल पहले स्वयं को एडजेस्ट करने का दृढ़ संकल्प साथ सर्व को स्वयं द्वारा एडजेस्ट करने अर्थात् संस्कार मिलाने का दृढ़ संकल्प करना है। ये संस्कार मिलन की महारास अब बाबा देखना चाहते हैं। ऐसे कहते एक एक भाई बहन से नयन मुलाकात करते बापदादा वायदा करा रहे थे। सब बहुत अन्तर्मुखी रूप से नयन मिलन मनाते नयनों से हाँ जी का पाठ पढ़ रहे थे। उसके बाद दोनों दादियों को बाहों में समाएं बहुत-बहुत प्यार किया और कहा – आपका भी यही संकल्प है ना, अवश्य होना ही है सर्व को बनना ही है। ऐसे कहते बापदादा ने सभी को याद दी और मैं साकार वतन में आ गई। ओम् शान्ति।